मेरा दृष्टिकोण... सभी गुणों का समुच्चय कृतज्ञता

बात जब मानव की होती है तो पहला ध्यान मानवीयता पर जाता है। जो वस्तुतः सभी मानवोचित गुण-धर्मों का समुच्चय है। वही सब गुण जिनके बिना मानव को मानव नहीं माना जा सकता। मेरे दृष्टिकोण से ÷कृतज्ञता÷ एक ऐसा भाव या गुण है, जिसमें से सभी गुण स्वतः प्रकट होते हैं। कृतज्ञता ईश्वर, प्रकृति, जन्मदाता, पालक, मार्गदर्शक, सहयोगी सहित जड़-चेतन किसी के भी या सभी के प्रति हो सकती है। जो दया, आदर, सेवा, संवेदना, अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, अनुशासन, अनुशीलन, त्याग, समर्पण जैसे अनेकानेक भाव हृदय और मानस में उपजाती है।

उदाहरण देना हो तो श्री रामचरित मानस की एक चौपाई ही पर्याप्त है-

÷सियाराम-मय सब जग जानी।

करहुं प्रनाम जोरि जुग पानी।।÷

भावार्थ के अनुसार आप सृष्टि के कण-कण में अपने आराध्य का दर्शन करने लगिए। उनके प्रति सह-अस्तित्व की भावना के साथ नत-मस्तक होने का भाव जीवन में धारण कर लीजिए। आप पाएंगे कि सब अपने हैं। सबकी पीड़ा अपनी है। सबके हित अपने हैं। इसके बाद आप पूरी तरह संवेदी हो जाएंगे। आपके प्रत्येक दुर्गुण पर सद्गुण स्वतः भारी पड़ जाएगा। राग-द्वेष, लोभ, मद, वैमनस्य, प्रतिशोध, एकाधिकार, अतिक्रमण, अधिग्रहण, दोहन, शोषण, हिंसा, दुर्व्यवहार, अशिष्टता आदि का नामो-निशान शेष नहीं रहेगा। कृतज्ञ होकर मान-सम्मान देंगे तो अहित की भावना का शमन हो जाएगा। बुरा करते, बुरा सोचते, बुरा सुनते, बुरा देखते आपकी आत्मा कम्पित होगी। आपका हृदय ही नहीं मस्तिष्क भी आपको धिक्कारने लगेगा।विषय अत्यंत सरस व सरल होने के बाद भी विशद है। अत्यधिक विस्तार देने की आवश्यकता नहीं। अनुरोध अपने व अपनी संतति में कृतज्ञता के बीजारोपण का है ताकि वह एक समग्र मानवता के वृक्ष को जन्म दे। जिसकी शाखाएं अन्यान्य गुणों का प्रतिनिधित्व करें तथा उनके आश्रय में सभी शीतल छांह पा सकें। जय राम जी की।।

प्रणव प्रभात, श्योपुर (मप्र)

सूचना युग में सोच का अकाल

हम ऐसे युग में जी रहे हैं जहाँ जानकारी की बारिश है, पर समझ की ज़मीन बंजर। मोबाइल में इंटरनेट है, दिमाग में नेटवर्क नहीं। सुबह आँख खुलते ही अलार्म नहीं, नोटिफिकेशन बजता है–÷किसी ने कुछ कहा÷, ÷किसी ने कुछ सुना÷, और सबसे ज़रूरी–÷किसी ने कुछ बिना सोचे शेयर कर दिया।÷ आजकल विचार बनाने के लिए दिमाग नहीं, डेटा पैक चाहिए। जितना ज़्यादा रिचार्ज, उतना गहरा ज्ञान–कम से कम हमें यही समझाया गया है। व्हाट्सऐप यूनिवर्सिटी से निकले विशेषज्ञ हर विषय पर पीएचडी रखते हैं–वायरस से लेकर वैदिक विमान तक। तर्क पूछना देशद्रोह है और सवाल करना चरित्रहीनता। समाज अब 'सुनो और मानो' के सिद्धांत पर चलता है। सोचने का काम एल्गोरिद्म करता है, हम बस स्क्रॉल करते हैं। किसी पोस्ट पर हँसना हो तो ?? है, दुखी होना हो तो ??–भावनाओं का भी रेडीमेड पैकेट। आत्ममंथन की ज़रूरत नहीं, ऑटो-रिप्लाई काफी है। राजनीति अब बहस नहीं, ब्रॉडकास्ट है। सच वही जो ज़ोर से कहा जाए, और सही वही जो बार-बार दोहराया जाए। जो चुप है, वो संदिग्ध है; जो अलग बोले, वो एजेंडा है। विचारधारा नहीं, वॉल्यूम मायने रखता है। शिक्षा भी अपग्रेड हो गई है–पढ़ाई कम, प्रेज़ेंटेशन ज़्यादा। बच्चे उत्तर नहीं ढूँढते, कीवर्ड पकड़ते हैं। शिक्षक ज्ञान नहीं देते, स्लाइड बदलते हैं। परीक्षा में वही पास जो 'समझ' नहीं, 'स्पीड' रखता है। और रिश्ते? वे भी ऑनलाइन हैं–लाइक से शुरू, सीन पर खत्म। बात करने का समय नहीं, स्टेटस लगाने का दबाव है। पास बैठकर भी दूर हैं, क्योंकि नेटवर्क फूल है। फिर भी हम आशावादी हैं। हर सुबह सोचते हैं–आज कुछ बदलेगा। शायद बदलेगा भीज जब कभी बैटरी खत्म होगी, तब हम चार्जर नहीं, बातचीत ढूँढेंगे। जब इंटरनेट स्लो होगा, तब दिमाग तेज़ चलेगा। और जब शोर थकेगा, तब शायद सोच को आवाज़ मिलेगी। तब तक–शेयर करते रहिए, क्योंकि यही हमारा समय है–जहाँ विचार कम, फॉरवर्ड ज़्यादा हैं। **मुकेश कुमार बिस्सा, जैसलमेर**

चौबिसा विकास मंच सेटवाना द्वारा नि:शुल्क नेत्र शिविर का सफल आयोजन

चौबिसा विकास मंच के बैनर तले गांव सेटवाना में गोमाबाई नेत्रालय के तत्वाधान में नेत्र शिविर का आयोजन किया गया है जिसमें 150 से अधिक

रोगियों की नेत्र जाँच हुई साथ ही 35 रोगियों को मोतियाबिंद के ऑपरेशन के लिए नीमच लेजाया गया है जिनका ऑपरेशन होने पर सभी को गांव सेटवाना में नि:शुल्क लाकर छोड़ा जायेगा इस आयोजन को सफल बनाने के लिए सभी गांव स्तर पर विकास मंच के सदस्यों द्वारा प्रचार किया गया साथ ही कार्यक्रम में चौबीसा विकास मंच की अध्यक्षता करते हुए जगदीश जी कोजावत, कैलाश जी पुरोहित, प्रेमशंकर जी कोजावत, शांतिलाल जी कोजावत, कमलाशंकर जी कोजावत संतोष जी पुरोहित मंच संचालन करते हुए दिनेश जी पुरोहित, देवेन्द्र जी कोजावत साथ ही व्यवस्था में एडवोकेट लीलाधर चौबीसा, दीपक चौबीसा, गोपाल जी कोजावत व सभी युवा साथियों के साथ गांव के पटेलों गाँव वासियों ने बढ़चढ़कर संयोग किया

ठठेरा : हरियाणवी लोकजीवन में धातु-शिल्प परम्परा का अध्ययन

1. प्रस्तावना- मानव सभ्यता के विकासक्रम में धातु-शिल्प का उद्भव एक निर्णायक एवं युगांतरकारी चरण माना जाता है। जब मानव ने पत्थर और लकड़ी से आगे बढ़कर तांबा, कांसा और बाद में पीतल तथा मिश्रित धातुओं का प्रयोग आरम्भ किया, तब न केवल उसकी भौतिक आवश्यकताओं में विस्तार हुआ, बल्कि सामाजिक संरचना, श्रम-विभाजन और पेशागत वर्गीकरण की प्रक्रिया भी प्रारम्भ हुई। धातु के औजारों और पात्रों ने कृषि, भोजन-संरक्षण, व्यापार और घरेलू जीवन को स्थायित्व प्रदान किया।

भारतीय लोकजीवन में इस धातु-आधारित संस्कृति को विकसित और संरक्षित करने वाले शिल्पकारों में ठठेरा समुदाय का विशिष्ट स्थान रहा है। हरियाणवी लोकसंस्कृति में ठठेरा, कसेरा, कसारा, कंसारा एवं कांस्यकार जैसे नामों से जाना जाने वाला यह समुदाय पारम्परिक धातु-पात्र निर्माण, मरम्मत, ढलाई और कलई जैसे कार्यों से जुड़ा रहा है। ठठेरा केवल एक पेशागत वर्ग नहीं, बल्कि लोकजीवन की आवश्यकताओं, स्वास्थ्य-बोध, सांस्कृतिक परम्पराओं और सामाजिक स्मृति का संवाहक है।

2. अध्ययन के उद्देश्य एवं पद्धति- इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं– हरियाणवी लोकजीवन में ठठेरा समुदाय की ऐतिहासिक एवं सामाजिक भूमिका का विश्लेषण। ठठेरागिरी की पारम्परिक तकनीकों, उपकरणों और कार्य-प्रणाली का विस्तृत विवेचन। ठठेरा शिल्प के सांस्कृतिक, भाषिक एवं प्रतीकात्मक आयामों को समझना। समकालीन औद्योगिक परिवर्तनों के संदर्भ में इस परम्परा के संकट और संरक्षण की संभावनाओं का मूल्यांकन। अध्ययन की पद्धति लोकसाहित्य, नृवंशशास्त्रीय अध्ययन, क्षेत्रीय सांस्कृतिक संदर्भों तथा विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण पर आधारित है।

3. ठठेरा शब्द की व्युत्पत्ति एवं सामाजिक पहचान- 'ठठेरा' शब्द की व्युत्पत्ति धातु को पीटने, ठोकने और आकार देने की प्रक्रिया में उत्पन्न होने वाली 'ठक-ठक' ध्वनि से मानी जाती है। यह ध्वनि न केवल शिल्प-क्रिया का संकेत है, बल्कि ठठेरा समुदाय की पहचान का भी प्रतीक बन गई। जो लोग पीतल, तांबा, कांसा एवं मिश्रित धातुओं से बर्तन बनाने, सुधारने, जोड़ने और कलई करने जैसे कार्यों से जुड़े रहे, वे ठठेरा कहलाए। हरियाणा क्षेत्र में ठठेरा को कसेरा, कसारा, कंसारा या कांस्यकार भी कहा जाता है। ये नाम क्षेत्रीय भाषिक विविधता और शिल्प-विशेषताओं को दर्शाते हैं। पारम्परिक ग्रामीण समाज में ठठेरा की पहचान एक आवश्यक सेवा-प्रदाता के रूप में रही, जिसकी अनुपस्थिति में घरेलू जीवन की निरंतरता बाधित हो सकती थी।

4. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में ठठेरा परम्परा- धातु-शिल्प का इतिहास भारतीय सभ्यता जितना ही प्राचीन है। सिंधु घाटी सभ्यता से प्राप्त कांस्य और तांबे के पात्र इस शिल्प की उन्नत अवस्था का प्रमाण हैं। वैदिक एवं उत्तर-वैदिक काल में भी धातु-पात्रों और औजारों के उल्लेख मिलते हैं।

हरियाणा, जो प्राचीन सभ्यताओं और सांस्कृतिक गतिविधियों का केंद्र रहा है, वहाँ ठठेरा परम्परा का निरंतर विकास हुआ। ग्रामीण समाज में यह शिल्प पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होता रहा और स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार ढलता गया।

5. ठठेरागिरी की पारम्परिक तकनीक- ठठेरागिरी एक जटिल और अनुभव-आधारित शिल्प है। ठठेरा अपने कार्य में अनेक विशिष्ट क्रियाओं का प्रयोग करता है, जिनमें– तपाई = धातु को आग में तपाकर उसे कार्य-योग्य बनाना। गलाई या गवाई = धातु को गलाकर ढलाई के लिए तैयार करना। बढ़ाई (वर्धन) = पीट-पीटकर धातु का फैलाव बढ़ाना। घड़ाई (घटन) = धातु को इच्छित आकार में ढालना। जड़ाई = जोड़ या मरम्मत का कार्य। मढ़ाई या मठराई (मृष्टन) = सतह को चिकना और मजबूत बनाना। इन सभी प्रक्रियाओं में ठठेरा धातु के स्वभाव, तापमान और मोटाई की सूक्ष्म समझ रखता है। यह ज्ञान पुस्तकीय न होकर अनुभव और परम्परा से अर्जित होता है।

6. उपकरण एवं कार्यसामग्री- ठठेरागिरी में प्रयुक्त उपकरणों की संख्या और विविधता इस शिल्प की तकनीकी परिपक्वता को दर्शाती है। इनमें हथौड़ा, हथौड़ी, बगला हथौड़ा, गोरमा हथौड़ा, घण, सलाई, सलाख, रांग, मेख, खरबै, गट्टक, इकवाई, कौंच, तमड़ा, सुम्बा, बेरणा, टांकला, परकार, रेत्ता, कातरी, संडासी और अडांसी प्रमुख हैं। ये उपकरण केवल औजार नहीं, बल्कि ठठेरे के कौशल और शिल्प-परम्परा के प्रतीक हैं। प्रत्येक उपकरण का विशिष्ट कार्य होता है और उसका प्रयोग विशेष अनुभव की मांग करता है।

7. निर्मित पात्र एवं उनकी उपयोगिता- ठठेरे द्वारा निर्मित धातु-पात्र हरियाणवी लोकजीवन की दैनिक आवश्यकताओं से गहराई से जुड़े रहे हैं। इनमें डेग, डेगची, कुण्डी, लोटा, सागर, परात, थाली, थाल, छाणणी, टोकणी, कुजड़ा, बाल्टी, पतीला, पतीली, भरतुआ, लोटुआ और बेखोरा प्रमुख हैं। पीतल, तांबा तथा अन्य धातुओं की ढलाई से संबंधित कार्य को लोकभाषा में 'भरत का काम' कहा जाता है। ये पात्र न केवल टिकाऊ होते हैं, बल्कि स्वास्थ्य की दृष्टि से भी उपयोगी माने जाते हैं। ग्रामीण और शहरी दोनों प्रकार के समाज में इनका व्यापक प्रयोग रहा है।

8. ठठेरा और कलई परम्परा

कलई परम्परा ठठेरागिरी का एक महत्वपूर्ण अंग है। ग्रामीण हरियाणा में तांबा और पीतल के बर्तनों पर कलई कराना स्वास्थ्य एवं संरक्षण की दृष्टि से अनिवार्य माना जाता है।

कलई से पूर्व बर्तन को रेत से अच्छी तरह साफ किया जाता है। इसके बाद उसे आग पर गर्म कर रुई या कपड़े की सहायता से उस पर कलई चढ़ाई जाती है। यह प्रक्रिया बर्तन की आयु बढ़ाने के साथ-साथ उसमें रखे खाद्य और पेय पदार्थों को सुरक्षित रखती है। कलई की यह परम्परा लोकज्ञान और वैज्ञानिक समझ का समन्वय प्रस्तुत करती है।

9. ठठेरा और हरियाणवी लोकजीवन- हरियाणवी लोकसमाज में ठठेरे की उपस्थिति केवल आर्थिक या व्यावसायिक नहीं रही, बल्कि सांस्कृतिक भी रही है। बड़े गाँवों, कस्बों और नगरों में ठठेरों के लिए पृथक स्थान निर्धारित होते थे। आज भी अनेक स्थानों पर 'ठठेरों वाली गली' जैसे स्थलनाम मिलते हैं। लोकभाषा में प्रचलित मुहावरे–ठठेरे की बिल्ली होना, ठठेरे ज्यूँ ठक-ठक करना, कलई खोलणा, ठठेरागिरी करणा–इस समुदाय की सामाजिक उपस्थिति और सांस्कृतिक महत्त्व को रेखांकित करते हैं।

10. समकालीन संकट और परिवर्तन- आधुनिक औद्योगिक उत्पादन, मशीन-निर्मित बर्तनों और प्लास्टिक एवं स्टील के व्यापक प्रयोग ने ठठेरागिरी की पारम्परिक परम्परा को संकटग्रस्त कर दिया है। बाजार-आधारित अर्थव्यवस्था में हस्तनिर्मित धातु-पात्रों की मांग घटती जा रही है। इसके परिणामस्वरूप ठठेरे अब परम्परागत पेशे से विमुख हो रहे हैं। यह संकट केवल आर्थिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक भी है, क्योंकि इसके साथ लोकज्ञान और पारम्परिक तकनीकी कौशल के लुप्त होने का खतरा जुड़ा है।

11. संरक्षण एवं पुनरुत्थान की संभावनाएँ- ठठेरा शिल्प के संरक्षण के लिए अकादमिक अध्ययन, संग्रहालयों में प्रदर्शन, सांस्कृतिक नीति-निर्माण और बाजार-समर्थन आवश्यक है। यदि इस शिल्प को आधुनिक डिज़ाइन, स्वास्थ्य-बोध और पर्यावरण-अनुकूल जीवनशैली से जोड़ा जाए, तो इसके पुनरुत्थान की संभावनाएँ सशक्त हो सकती हैं।

12. उपसंहार- ठठेरा समुदाय और धातु-शिल्प परम्परा हरियाणवी लोकजीवन की प्राचीन, बहुआयामी और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध धरोहर है। यह शिल्प मानव की रचनात्मकता, श्रम-संस्कृति और प्रकृति के साथ सामंजस्य का प्रतीक है। इसके संरक्षण और संवर्धन के बिना लोकसंस्कृति की निरंतरता अधूरी रह जाएगी। अतः ठठेरागिरी को केवल अतीत की स्मृति न मानकर वर्तमान और भविष्य की सांस्कृतिक पूँजी के रूप में देखना आवश्यक है। **मनजीत सिंह, सहायक प्रोफेसर पार्ट टाइम,कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र**

लपरहा दूरा - रमेसर (बत्तू)

एकठोक नानकुन गांव के दूरा, नाव हे रमेसर। फेर गांव वाला मन ओकर नाव बत्तू रख दे हावय, काबर कि ओहा उपराहा-उपराहा गोंठियाथे अऊ अब्बड़ मजखिया किसम के व्यक्तिव हे। सबो म ओहा हांसी-ठट्ठा करत रहिथे। बात-बात म हांसी-मजाक करतेच रहिथे। कोनो ओखर बात ल सिरियस ही नई लेवय। एकबेरा के बात आए। एक दिन ओकर महतारी दाई ह खेत कमाय बर गे रिहिसे। त जल्दी आगे कुछु घर म बुता रिहिसे, त रमेसर ह उही खेत म चल दिस। अउ बाकी अउ कमइया मन ल ए कहिके कि ओकर मां के सोना के खिंनवा ह गुंवा गेहे, कमात-कमात। ओमन ल खोजवाए बर भिड़वा दिस, अउ अपन चुपे मेड़ म बइठ के मजा लेवत रिहिसे। एती सबो कमइया मन बपरी के सोन के खिंनवा दई बड़ उदास होही, ओहा कहिके एती-ओती सपुरा खेत म खोजत हावय। अब्बड़ बेरा होइस त रमेसर (बत्तू) ह हांसत-हांसत कहिथे–

÷नई गुंवाए हे वो, में तो अइसने मजाक करत रेहे हंव।÷

कहिके कठल-कठल के हांसत हावय।

कमइया मन ओला अब्बड़ सुनइस, गारी तको दिस बत्तू ला।

वइसने एक बेर घर में कोनो नई रिहिसे। त घर म ÷सांप निंगे हें, अजगर सांप!÷ कहिके पूरा पारा भर के मन ल सकेल लिस। अपन घर म सबो झन एती-ओती छिंरी-बिंरी, सबो डाहर ल देखत हे–कहां हे सांप ह, कहिके।

कुछ बेरा होइस त रमेसर बत्तू–

÷ठग देंव रे, ठग देंव।÷

कहिके हांसत सबो ल किहिस।

फेर पारा वाला मन ले बिक्कट गारी खाईन।

÷तोर सेती हमन घर के बुता-काम ल छोड़ के एती आय हावन, अउ तोला हांसी-ठट्ठा सूझत हे?÷

कहिके।

अइसने बेरा बीतत गीस। अइसने अउ अब्बड़ घांव ले ठग अउ मजाक के सेती, गांव के सबो झन मन रमेसर बत्तू के बेवहार ले परचित होंगे हावय कि एहा बड़ ठगरा हे, अउ मजकिया किसम के हे, कहिके।

एक दिन रमेसर ह तरिया म नहाय बर गे रिहिसे। तरिया बिक्कट गड्ढा हे। कहिके सबो गांव वाला मन पार के आसे-पास डूबक-डूबक के नहाय। तरिया म बिक्कट खोखमा बगर तको गे हावय।

रमेसर ह तरिया ल आर-पार करहू, कहिके तऊंरत जावत हावय। बीच तरिया म गिस, त ओकर गोड़ ह खोखमा के बार म अरहज गे। त रमेसर ह चिल्ला-चिल्ला के–

÷बचाव! बचाव!÷

कहिके चिल्लावत रिहिसे।

फेर गांव वाला मन कोनो जियादा धियान नई दीस हे।

÷अरे, एकर तो अइसने मजाक करे के आदत हे। अभी तको अइसने बूड़े के नाटक करत होही।÷

कहिके।फेर ए दारी सहिंच म ओकर गोड़ ह खोखमा के नार म अरहज गे रिहिसे। अउ सहिंच म ÷बचाव-बचाव÷ कहिके चिल्लावत रिहिसे। बीच तरिया म तऊरत-तऊरत सांस हफर गे, अउ पानी म बुड़ गे। अउ धीरे-धीरे पानी पिये के सेती ओकर सांस थिरा गे।

गांव वाला मन अब्बड़ देर होगे, कहिके धकर-लकर तरिया म निंगिस। अउ ओला तरिया ले बाहिर निकालिस। फेर तब तक अड़बड़ बेर होगे रिहिसे। रमेसर के सांस ह थिरा गे रिहिसे।

सियान मन कहातेच हे–

÷हमन तो तोला हांसिच-ठट्ठा करत होही काहत रेहेन रे। फेर ए दारी सिरतोनेच म ए घटना होए रिहिसे। आज तोरेच हांसी-ठट्ठा के आदत ह तोर जान ल ले डरिस रे, रमेसर बत्तू।÷

आज गांव म जब-जब कोनो लइका जियादा हांसी-मजाक करत रहिथे, त ओकर घर वाला मन रमेसर बत्तू के कहानी ल बताथे अउ चेताथे।

- गणेश्वर पटेल, ग्राम पोटियाड़िह, जिला धमतरी(छ ग).

हंगामा लोक समिति द्वारा किया गया महाराणा प्रताप जी को नमन

हंगामा लोक सामाजिक,साहित्य समिति द्वारा महाराणा प्रताप जी की पुण्यतिथि पर उनको पुष्पाजंलि अर्पित कर व दीप प्रज्ज्वलित कर श्रद्धाजंलि अर्पित की गयी। कार्यक्रम में संस्था की संस्थापिका राखी कौशिक उपासना कौशिक संस्था के संरक्षक डॉ जितेन्द्र कौशिक निर्मला कौशिक ,कुलदीप,सोनम, वंशिका चौहान, नरेश चौहान,भव्या,अंबरीश,सार्थक रस्तौगी, लक्ष्य सैनी आदि उपस्थित रहे सभी के द्वारा महाराणा प्रताप जी को पुष्पाजंलि अर्पित की गयी । कार्यक्रम में कुलदीप द्वारा महाराणा प्रताप जी के जीवन पर प्रकाश डाला गया व नरेश चौहान द्वारा उनके जीवन के संघर्षों के बारे में बताया।

डॉ. गौतमसिंह पटेल की 26 वीं कृति 'गौरी-गणेश' का भव्य

इन्दौर समाचार संवाददाता = छत्तीसगढ़ पेंशनधारी कल्याण संघ का तहसील स्तरीय सम्मेलन सत्यमहिमा आश्रम, सरिया (जिला-सारंगढ़-बिलाईगढ़) में सोमवार, दिनांक 19 जनवरी 2026 को अत्यन्त गरिमामय, प्रेरणास्पद और साहित्यिक चेतना से परिपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। यह सम्मेलन न केवल पेंशनधारियों के अधिकारों और हितों के लिए एक सशक्त मंच सिद्ध हुआ, अपितु छत्तीसगढ़ की साहित्यिक परम्परा को गौरवान्वित करने वाला ऐतिहासिक अवसर भी बना, जब वरिष्ठ साहित्यकार, स्वतंत्र पत्रकार और अनुसंधेय रचनाकार डॉ. गौतमसिंह पटेल 'सालर' की 26 वीं कृति 'गौरी-गणेश' का भव्य विमोचन सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में छत्तीसगढ़ पेंशनधारी कल्याण संघ के प्रान्तीय अध्यक्ष डॉ. डी. पी. मनहर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उनके साथ रायपुर, रायगढ़, सारंगढ़, बिलाईगढ़, पुसौर, सरिया, बरमकेला सहित विभिन्न अंचलों से पधारे सैकड़ों पदाधिकारी एवं सदस्यगण इस ऐतिहासिक आयोजन के साक्षी बने। सम्मेलन का संचालन परमादरणीय श्री त्रिलोचन पटेल जी द्वारा अत्यन्त गरिमामय ढंग से किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ मंचासीन अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन एवं पुष्पहार अर्पण कर माँ सरस्वती के वन्दन-गान से हुआ। विद्या, विवेक और वाणी की अधिष्ठात्री देवी के चरणों में नमन कर आयोजन को साहित्यिक चेतना और सांस्कृतिक गरिमा से अनुप्राणित किया गया। अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में प्रान्तीय अध्यक्ष डॉ. डी. पी. मनहर ने पेंशनधारियों के हितों के प्रति संघ की प्रतिबद्धता को दोहराते हुए कहा कि संघ सदैव पेंशनधारियों के अधिकारों की रक्षा के लिए शासन-प्रशासन के समक्ष उनकी आवाज बुलन्द करता रहेगा। उन्होंने आश्वस्त किया कि संघ हर सम्भव सहयोग प्रदान करेगा और पेंशनधारियों की समस्याओं के समाधान हेतु निरन्तर संघर्ष करता रहेगा। उन्होंने तहसील स्तरीय पेंशनधारी कल्याण संघ, सरिया की सक्रियता की मुक्तकंठ से प्रशंसा करते हुए कहा कि सरिया तहसील के पेंशनधारी अत्यन्त सजग, जागरूक और संगठित हैं। यह संगठन सदैव संघ के हित में मजबूती से कार्य करता आ रहा है और पूरे प्रदेश में अपनी कर्मठता का उदाहरण प्रस्तुत कर रहा है। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि हाल ही में संघ द्वारा प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय जी से भेंट कर पेंशनरों की 14 सूत्रीय समस्याओं के समाधान हेतु ज्ञापन सौंपा गया है, जिस पर मुख्यमंत्री महोदय ने सहानुभूतिपूर्वक विचार करते हुए समाधान का आश्वासन दिया है।

रिपोर्ट - माता-पिता के लिए विशेष संदेश-

संस्कारों और किताबों की खुशबू से महका विश्व पुस्तक मेला, पीढ़ियों को जोड़ने का बना माध्यम

नई दिल्ली। प्रगति मैदान में आयोजित विश्व पुस्तक मेले का दृश्य इस बार केवल किताबों की प्रदर्शनी तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह परिवारों के लिए एक भावनात्मक और प्रेरक उत्सव बन गया। एशियन लिटरेचर सोसाइटी द्वारा आयोजित एक विशेष परिचर्चा ने यह सिद्ध कर दिया कि डिजिटल चकाचौंध के बीच भी शब्द ही वह डोर हैं, जो एक घर की तीन पीढ़ियों–बुजुर्गों, माता-पिता और बच्चों–को एक सूत्र में पिरोते हैं।

साहित्यिक मंच पर पीढ़ियों का संगम- इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. ओमप्रकाश क्षत्रिय %प्रकाश%, डॉ. नीतू सिंह राय और डॉ. अनिता चंद ने अपनी उपस्थिति से न केवल मंच की शोभा बढ़ाई, बल्कि उपस्थित अभिभावकों को जीवन का एक नया दृष्टिकोण दिया। सत्र का कुशल संचालन किरण बाबल ने किया। वक्ताओं ने बड़े ही मार्मिक ढंग से यह संदेश दिया कि एक घर में दादा-दादी के अनुभवों का खजाना, माता-पिता का मार्गदर्शन और बच्चों की नई ऊर्जा तभी सार्थक होती है, जब उनके बीच संवाद का माध्यम %किताबें% बनती हैं।

डिजिटल युग में पाठक की बदलती भूमिका- चर्चा के दौरान यह बात प्रमुखता से उभरी कि आज के डिजिटल युग में पाठक अब केवल निष्क्रिय पाठक नहीं रह गया है। डॉ. प्रकाश और अन्य विद्वानों ने बताया कि तकनीक ने पढ़ने को बहुआयामी बना दिया है। अब पाठक सामग्री

को साझा करता है, उस पर टिप्पणी करता है और सामुदायिक चर्चाओं का हिस्सा बनता है। जहाँ एक ओर यह सक्रियता सुखद है, वहीं वक्ताओं ने मैरिएन वुल्फ जैसे शोधकर्ताओं का हवाला देते हुए माता-पिता को सचेत भी किया। उन्होंने कहा कि स्क्रीन पर लगातार पढ़ने से बच्चों की गहन सोच और एकाग्रता प्रभावित हो रही है। ऐसे में माता-पिता की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है कि वे तकनीक का लाभ तो उठाएं, लेकिन बच्चों को गहराई से सोचने की आदत भी डालें।

प्रिंट किताबों का स्पर्श- एक भावनात्मक विरासत- आज के दौर में जब हर चीज़ ऑनलाइन उपलब्ध है, तब भी %प्रिंट किताबों% की प्रासंगिकता पर विशेष जोर दिया गया। वक्ताओं ने साझा किया कि कागज की खुशबू, पन्नों की सरसराहट और किताब को हाथ में पकड़ने का जो संवेदी अनुभव है, वह किसी भी स्क्रीन पर संभव नहीं है। शोध बताते हैं कि प्रिंट किताबों से सीखी गई बातें स्मृति में लंबे समय तक अंकित रहती हैं। यह बुजुर्गों के लिए अपनी विरासत को पोते-पोतियों तक पहुँचाने का सबसे सशक्त माध्यम है। अभिभावकों के लिए प्रेरक संदेश- कैसे विकसित करें पढ़ने की संस्कृति? नई पीढ़ी, जो वीडियो और गेम्स की दुनिया में पली-बढ़ी है, उनमें पढ़ने की संस्कृति विकसित करने के लिए माता-पिता को कुछ बुनियादी और भावनात्मक कदम उठाने की सलाह दी गई- उदाहरण बनें- बच्चे वह नहीं करते जो हम कहते हैं, वे वह करते हैं जो हम करते हैं। यदि माता-पिता स्वयं किताब पढ़ेंगे, तो बच्चे भी उसे अपनाएंगे। पठन कोना (Reading Corner)- घर में एक छोटा सा कोना किताबों के लिए समर्पित करें, जहाँ परिवार के सदस्य साथ बैठकर पढ़ें। चर्चा का माहौल- स्कूलों और घरों में कहानियों पर चर्चा करें, लेखकों से मिलें और पढ़ने को एक बोझ नहीं, बल्कि खेल की तरह मजेदार बनाएँ। यह पूरा कार्यक्रम उपस्थित माता-पिता और बुजुर्गों के लिए एक प्रेरणादायक अनुभव रहा। अंत में यह संदेश दिया गया कि डिजिटल तकनीक और किताबों का स्पर्श मिलकर ही एक स्वस्थ और शिक्षित समाज का निर्माण कर सकते हैं। जैसा कि परिचर्चा का सार था– ÷किताबों के सानिध्य में बीता समय ही एक परिवार के लिए सबसे बड़ी और अनमोल पूंजी है।

हेमलता को मिली पीएचडी उपाधि

रीवा। अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा में शोधरत हेमलता दाहिया को पीएचडी उपाधि प्रदान की गई है। हेमलता दाहिया आत्मज अच्छेलाल दाहिया को सामाजिक विज्ञान संकाय में राजनीति शास्त्र के अंतर्गत इनके शोध ÷मध्यप्रदेश में अनुसूचित जाति एवं जनजाति की राजनीतिक सहभागिता का विश्लेषणात्मक अध्ययन ÷(रीवा जिले की सेमरिया तहसील के विशेष सन्दर्भ में) अध्ययन कर अपना शोध कार्य पूर्ण किया इस पर पीएचडी की उपाधि प्रदान की गई । हेमलता ने प्रोफेसर डॉ. एस.पी .शुक्ला शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय के कुशल निर्देशन में शोध कार्य पूर्ण किया है। इनकी उपलब्धि पर माता-पिता सुनीता अच्छेलाल दाहिया, चाचा- चाची आशा-रामदीन सास- ससुर शकुंतला - शेषमणि दाहिया, पति आशीष दाहिया, मामा- मामी अनीता-आलोक नारायण दाहिया,भाई -भाभी अनिल-रेणु दाहिया , प्रदीप- प्रीति दाहिया,अंशु दाहिया, सुमनलता दाहिया, कबीर,आयुष , मोहित आदर्श,रुद्रवीर, सहित मित्र डॉ.पुष्पा साकेत, डॉ.फूल कुमारी साकेत, डॉ.रजनी चौधरी,सरिता साकेत, अल्फिया खान,अनु शर्मा, के अलावा रिश्तेदारों ने हर्ष व्यक्त करते शोध कार्य की सराहना की है और महत्वपूर्ण व प्रासंगिक तथा भावी दिशा दर्शन में उपयोगी सिद्ध होने की कामना के साथ ही अच्छे भावी जीवन की कामना की है।